ISSN 0973-3914

RESEARCH Journal Of SOCIAL AND LIFE SCIENCES

PEER-REVIEWED RESEARCH JOURNAL
UGC JOURNAL NO. (OLD) 40942
IMPACT FACTOR 3.928

Indexed & Listed at: Ulrich's International Periodicals Directory
ProQuest, U.S.A. Title Id: 715205

अंक XXX-XXXI हिन्दी संस्करण वर्ष – 15 दिसम्बर 2019 मार्च 2020

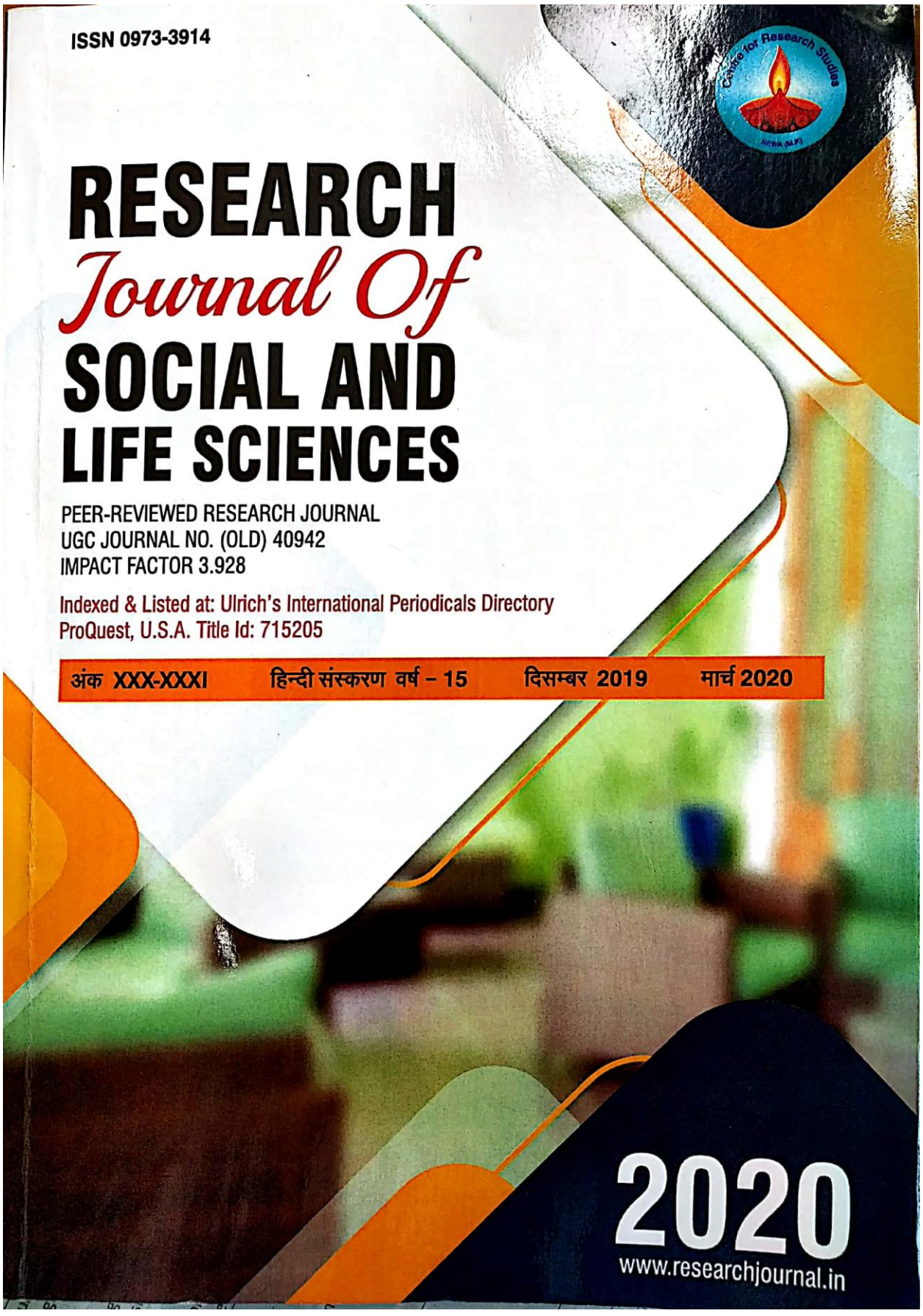

2020
www.researchjournal.in

आई. एस. एस. एन. 0973–3914

रिसर्च जरनल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस

Peer-Reviewed Research Journal
UGC Journal No. (Old) 40942
Impact Factor 3.928
Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest, U.S.A. Title Id : 715205

अंक-XXX-XXXI हिन्दी संस्करण वर्ष-15 दिसम्बर 2019- मार्च 2020

प्रधान सम्पादक

प्रोफेसर ब्रजगोपाल

सेवानिवृत्त आचार्य, उच्च शिक्षा
प्रतिष्ठित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवार्ड से सम्मानित
profbrajgopal@gmail.com

ऑनरेरी सम्पादक

डॉ. अखिलेश शुक्ल

प्राध्यापक, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
प्रतिष्ठित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवार्ड तथा पं. गोविन्द वल्लभ पंत एवार्ड से सम्मानित
akhileshtrscollege@gmail.com

डॉ. संध्या शुक्ल

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
drsandhyatrs@gmail.com

डॉ. गायत्री शुक्ल

अतिरिक्त निदेशक, सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा
shuklagayatri@gmail.com

डॉ. आर. एन. शर्मा

सेवानिवृत्त आचार्य, उच्च शिक्षा, रीवा
rnsharmanehru@gmail.com

सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा की मुख्य शोध पत्रिका
म.प्र. सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1973 के अंतर्गत पंजीकृत
पंजीयन क्रमांक 1802 (सन् 1997)

12. महिलाओं के विकास में महिला एवं बाल विकास विभाग की प्रमुख योजनाओं के उपलब्धियों का अध्ययन (छत्तीसगढ़ धमतरी जिले के कुरूद ब्लॉक के विशेष संदर्भ में) 87
वेणु साहू, के. पद्मावती

13. समाज में वैधानिक परिवर्तन–डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का दृष्टिकोण 92
विमला सिंह, सुषमा श्रीवास्तव

14. वैकल्पिक न्याय परिदान व्यवस्था के अंतर्गत लोक अदालत की भूमिका: एक विश्लेषात्मक अध्ययन 97
एस.पी. सिंह, सविता मिश्रा

15. मऊगंज विकासखण्ड : भूमि उपयुक्तता वर्गीकरण 105
आलोक कुमार राय
संदीप कुमार पटेल

16. गुप्तकाल संस्कृत साहित्य का स्वर्णयुग : एक ऐतिहासिक विश्लेषण 110
अमोल कुमार

17. युवाओं में नशे की समस्या (रीवा नगर के विशेष संदर्भ में) 116
महेश शुक्ला
मंजुल मयंक त्रिपाठी

18. स्वच्छता अभियान में सामाजिक संगठनों की भूमिका: समाजशास्त्रीय अध्ययन (रीवा शहर के विशेष सन्दर्भ में) 124
अखिलेश शुक्ल
शिवबिहारी कुशवाहा

19. गॉधी जी और उनकी अहिंसात्मक दृष्टि 130
रिचा मिश्रा

20. रीवा जिले में लोक अदालतों की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 134
एस.पी. सिंह
सविता मिश्रा

21. गुप्त युग की वेशभूषा 140
चन्द्रमौलि शुक्ल

22. भारतीय चिंतन परम्परा में कबीर की वैचारिकी 145
नरेन्द्र कुमार बौद्ध

23. अज्ञेय द्वारा लिखित 'गैंग्रीन' कहानी की सम्यक आलोचना 152
मधुकर राठोड़

24. संस्कृतसाहित्ये स्वात्मव्यवस्थाया: विवेचनम् 158
प्राची आर्या

UGC Journal No. (Old) 40942,
Peer-Reviewed Research Journal
Impact Factor 3.928, ISSN 0973-3914
Vol.- XXX-XXXI, Hindi Edition, Year-15, Dec. 2019- March 2020

भारतीय चिंतन परम्परा में कबीर की वैचारिकी

• नरेन्द्र कुमार बौद्ध

सारांश- उनका मूल उद्देश्य एक समानान्तर सामाज का निर्माण, दलित मुक्ति और मानवतावाद है। साधारण, अदना, पत्राधारी ब्राह्मण कबीर का निशाना कभी नहीं था, क्योंकि दमनमूलक सामन्ती वर्ण-व्यवस्था का मुख्य संरक्षक कभी भी अदना गरीब ब्राह्मण नहीं है। तत्त्वज्ञान का दम्भ भरने वाला 'मनुस्मृति' जैसे शास्त्रों से बार-बार उद्धरण देकर विधि-निषेधों का निर्देश करने वाला, वर्णाश्रम एवं मोक्ष की दार्शनिक व्याख्या देने वाला उच्च धार्मिक आसनों पर बैठा सम्पन्न ब्राह्मण है। दलित का शत्रु गरीब अदना ब्राह्मण कभी नहीं है। धार्मिक सत्ता का फायदा उठानेवाला चतुर ब्राह्मण है। कबीर का विरोध सिर्फ उन ब्राह्मणों से है, जो मिथ्या-चेतनाओं के बल पर जनता को सुलाकर रखना चाहते हैं। कबीर के विद्रोह की खूबी यह है कि यह इकहरा नहीं है। वे ब्राह्मणों के साथ उसी उग्रता से मुल्लाओं की आलोचना भी करते हैं। वे बड़े साहस से ऐसा करते हैं। कबीर की दलित चेतना को भक्ति ने साहस से भर दिया था, तभी वे बोले-'हम न मरैं मरिहैं संसारा, हम कूँ मिल्या जियावन हारा।' यदि भगवान मर जाएँगे, तब जरूर हम भी मर जाएँगे। भगवान ही नहीं मरेंगे तो हम क्यों मरेंगे। कबीर आगे मन के पूरे जोर से कहते हैं, 'शाक्त मरेंगे, सन्त नहीं, क्योंकि हम राम का रसायन पीते हैं।'

मुख्य शब्द- दलित, आत्म पहचान, पृथकवाद, परजीवी, संस्कृति।

कबीर में दलित आत्मपहचान की अवधारणा एक खास तरह की वैयक्तिकता के मानवीय अहसास की ओर भी ले जाती थी, लेकिन वहाँ कोई पृथकतावाद न था। आत्मपहचान की पश्चिमी अवधारणा पृथकता के बोध पर जोर देती है, जबकि कबीर की आत्मपहचान का सम्बन्ध अपृथकता से है। जिय भारतीय समाज में भेद के सैकड़ों स्तर-उपस्तर हों, वही अपृथकता की सही आत्मपहचान है।

कबीर की भक्ति वैयक्तिक, मिश्रण शील और सहज थी। लेकिन ध्यान में रखना होगा कि वह मुख्यत: यह सामाजिक अनुभव देती है कि हम सभी एक समग्र के अंश हैं, इस प्रकार अन्त:सम्पर्कित और परस्पर एक-दूसरे से प्रभावित हैं।

वे जितना ज्ञान पर जोर देते हैं, उतना ही प्रेम और श्रम पर भी। वे संन्यास और वैराग्य को लताड़ते हैं और श्रम पर जोर देते हैं।

कबीर दलित आत्मपहचान के संघर्ष को एक तरफ 'जाति न पूछौ साधु की' कहकर जाति-प्रथा-विरोध से जोड़ते हैं, दूसरी तरफ, जब वर्ग की अवधारणा का ऐतिहासिक अस्तित्व नहीं था, 'सूरा सो पहचानिए जो लरै दीन के हेत' कहकर जाति को

• अतिथि व्याख्याता, दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)